International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 11, November 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

" चारूचन्द्र चन्दोला के काव्य में व्यक्त 'पहाड़ की पीड़ा' का अंकन "

– श्रीमती सुमिता
शोधार्थिनी,
बी0एस0एम0(पी0जी0)कॉलेज,
रूड़की(उत्तराखण्ड़)
हेमवतीनन्दन बहुगुणा गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर,
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड़।

शोध सार – प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड़ के प्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार '**चारूचन्द्र चन्दोला**' के काव्य में व्यक्त 'पहाड़ की पीड़ा' का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है।

उत्तराखण्ड़ के प्रसिद्ध साहित्यकार व पत्रकार चारूचन्द्र चन्दोला ने अपनी साहित्य यात्रा में अनेक काव्यों का सृजन किया तथा इन सभी काव्यों में पहाड़ के आंचलिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिवेश को प्रमुखता से उजागर किया है। चारूचन्द्र जी का बाल्यकालपर्वतीय परिवेश में व्यतीत होने के कारण उनके मानस व हृदय पर पहाड़ के प्रतिबिंब की झलक स्पष्टतः दृष्टिगत होती है। पाँच वर्ष की अवस्था में ही अपनी माता के स्नह से वंचित होने के कारण इनका प्रारम्भिक जीवन ग्राम सुमाड़ी, पौड़ी गढ़वाल में इनके नाना डॉ0 भोलादत्त काला के संरक्षण में व्यतीत हुआ। चारूचन्द्र चन्दोला जी के मामा 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित डॉ0 सतीश चन्द्र काला उत्तर प्रदेश में प्रयाग संग्रहालय, इलाहाबाद के निदेशक पद पर कार्यरत रहे।

शैशवावस्था से किशोरावस्था तक का समय पहाड़ी परिवेश में व्यतीत होने से पहाड़ की नैसर्गिक सौन्दर्य शोभा, संस्कृति, धार्मिक–सामाजिक परिवेश के साथ–साथ पहाड़ के अभावों, पलायन की पीड़ा, जन समुदायों की निर्धनता व दुःखों का भीविवेचन चारू जी के काव्य में तीव्रता से मुखरित हुआ है।

चारू जी की आत्मा के रोम–रोम में पहाड़ निवास करता था। उन्होंने पर्वतीय परिवेश का वह प्राचीन सम्पन्न व समृद्ध समय भी देखा है और पश्चात् क्षीण होता हुआ पहाड़ भी जो उनके मन मस्तिष्क में निराशाओं की कड़ियों को जोड़ता है। स्वयं चारू जी के शब्दों में **"आज के उत्तराखण्ड़ के जिस पहाड़ में जन्म नहीं हुआ मेरा वह पहाड़ देवयोग से मेरे मन मस्तिष्क में ऐसा छाया और समाया कि जैसे अमावस्या की रात के तिमिर–तोम से उपजता है एक ऐसा, जो अमिट रूप में बना लेता है मेरे जैसे जीवन के घर में अपना बसेरा।"**[1]

चारू जी ने अपने काव्य में गढ़वाल के पहाड़ के जनजीवन के संस्कार, भौगोलिक परिवेश, सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक स्थिति–परिस्थितियों की छवियों व प्रतिछवि का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उत्तराखण्ड़ की प्राचीन व सुप्रसिद्ध पत्रिका **'युगवाणी'** में चारू जी ने गढ़वाल के समस्त दृश्य–परिदृश्यों का विवेचन अत्यन्त दृढता से सम्पादित किया है। स्वयं चारू जी के शब्दों में–

"युगवाणी साप्ताहिक के सम्पादन–कार्य के माध्यम से मैने अपने पहाड़ के इतिहास, भूगोल, चरित्र, अर्थ और अनर्थ का आत्मबोधन किया। खोये हुए बचपन और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 11, December 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किशोरावस्था के दिनों की खाज में अपने ननिहाल सुमाड़ी और पौड़ी जाने का क्रम भी बनाए रखा।"[2]

चारू जी ने अपने काव्य में पहाड़ के सभी सौन्दर्य व यथार्थ का वर्णन तो किया ही है साथ ही पहाड़ की वेदना का मार्मिक व कारूणिक विह्वल दृश्य पाठकों के समक्ष अत्यन्त भावुकता से विवेचित कर दिया है।

चारू जी का पहाड़ के प्रति अगाध प्रेम उनके व्यक्तिगत जीवन व कवित्व में स्पष्टतः झलकता है। उनका काव्य संग्रह 'कविता में पहाड़' उनके पहाड़ के गम्भीर विचारों व अन्वेषणों को प्रकट करता है। उत्तराखण्ड़ की विश्व में पर्वतीय नैसर्गिक सुन्दरता, संस्कृति, भौगोलिक वातावरण, जन–समुदाय का सरल स्वभाव व यहाँ की नारियों की कर्मठता स्वयं में ही अद्भुत है। परन्तु पर्वतीय क्षेत्रों में अभावों, निर्धनता, भौगोलिक आपदाओं, जीविकोपार्जन की समस्या, सुविधाओं की अल्पता आदि भी अत्यन्त दुःखद तथ्य हैं। साथ ही साथ इन सब दुःखद तथ्यों के परिणामस्वरूप सर्वप्रमुख समस्या है पलायन। जिसे चारू जी ने अत्यन्त मुखरित हो अपने काव्य ग्रन्थों में प्रतिपादित किया है।

इसी पहाड़ की समस्या को अपनी वेदनाभिव्यक्ति में चारू जी निरूपित करते हैं–

जिस पहाड़ में
अब नहीं बजते हैं ढोल–दमौं
नहीं दिखाई देते हैं चिड़ियों के घोल
दूण, माणी और पाथी के तोल
नहीं लगता है झुमैलो
नहीं पकता है मीठा भात
बसन्त–पंचमी के दिन।[3]

इन पंक्तियों में पूर्व की परिस्थितियों का वर्तमान की परिस्थितियों से साम्य कर चारू जी का दुःख द्रवित हो उठा है कि अब पहाड़ में हर्ष और आनन्द का वह वातावरण नहीं रह गया है जैसा कि पहले उपस्थित रहता था तथा संस्कृति भी अब शनैः शनैः विलुप्त होती जा रही है। पर्वों पर जिस प्रकार पहले उल्लास का दृश्य था अब ऐसा नहीं है। चारू जी ने पहाड़ के पलायन की समस्या को अत्यन्त गम्भीरता से लिया है तथा अपने अधिकांश काव्यों में इस समस्या के लिए अत्यन्त क्रुद्ध हो पर्वतवासियों पर निर्भय हो कटाक्ष भी किए हैं–

"मार रहा हूँ धाद–
बन जाओ बाघ, रीछ
गिद्ध, हाथी और सहस्त्रफणी नाग
कच्या दो, कचोर दो, गदोड़ दो
घचोर दो, डँग्ड्या दो, भचगा दो,
उन भूतों, प्रेतों, अशुभ ग्रहों और अवसादों को
जो तुम्हें दबाते, खाते, पटकाते, गदोड़ते
और डसते हुए आ रहे हैं।"[4]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 11, December 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पहाड़ की वेदना के आगे चारू जी अत्यन्त असहज व असमर्थ हो व्यथित हो उठे हैं। उन्होने अपने काव्य में पलायन करने वाले पर्वतीय जन–समुदाय की सुप्त मानसिकता को जगाने का भी अथक प्रयास किया है।

पहाड़ की वेदना के प्रति अत्यन्त संवेदनशील चारू जी का हृदय पर्वतीय अभावों को देख अत्यन्त दुःखी हो उठता। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में भी चारू जी ने अत्यन्त गम्भीरता से पहाड़ की वेदना का भावपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया है। पत्रकार कवि ने अपने समय में पर्वतीय भाषा के नवागन्तुक युवा लेखकों व कवियों को युगवाणी में यथास्थान दे प्रोत्साहित किया है।

पहाड़ की पीड़ा को अत्यन्त भावुक शब्दों में सृजित करते हुए चारू जी व्यक्त करते हैं–

"पहाड़ की पीड़ा को
लिखा जाना चाहिए
प्रेम–गीत
प्रत्येक शब्द का अर्थ
समझने के लिए
होनी चाहिए
कोदे, झंगोरे, काफल, किनगोड़
करौंदे और हिसर से
उपजी हुई बुद्धि।"[5]

चारू जी ने अत्यन्त सहज होकर यथार्थता को अपने काव्य में स्थान दिया है। उन्होंने अपनी कविताओं में पहाड़ के सूक्ष्म से सूक्ष्म जड़–चेतन तत्वों का विवेचन कर उसकी उपयोगिता को दर्शाया है। पहाड़ का नैसर्गिक सौन्दर्य हो, आर्थिक व सामाजिक परिवेश हो, वनस्पतियाँ, फल–फूल अनाज आदि तो कहीं जन–समुदाय की संस्कृति पर्वादि क्रिया कलापों का अत्यन्त सूक्ष्मता से अध्ययन व विवेचन किया है।

चारू जी के काव्य में वर्णित पर्वतीय विवेचन को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनके मन मस्तिष्क व शरीर के रोम–रोम में पहाड़ बसा है। उन्होंने पहाड़ की क्षय होती सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के लिए अत्यन्त उग्र हो सिंह की भाँति अपनी कविताओं में दहाड़ भी की है। जैसे उन्होंने पहाड़ के शान्त स्वभाव व सौन्दर्य का विवेचन किया है वहीं दूसरी ओर पहाड़ के रौद्र व भीषण रूप की ओर भी इशारा किया है–

"पहाड़ का स्वभाव है
चुप रहना
नदियों का
बहते रहना
जिस दिन लगेगी
उनके स्वभिमान पर चोट।
पानी में–
पैदा होगी
आग
पत्थर–पत्थर
बन जाएगा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 11, December 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बम।"6

पहाड़ में स्त्रियाँ अत्यन्त परिश्रमी, कर्मठ, जुझारू प्रवृत्ति की होती हैं। वह अपने सम्पूर्ण कष्टों को त्यागकर अपने परिवार के भरण–पोषण को अत्यन्त निष्ठापूर्वक निर्वहन करती है। प्रकृति के भौगोलिक विपरीत परिस्थिति का भी अपनी सामर्थ्य शक्ति से परिहास करती हुई अपने नित्य प्रतिदिन के कार्यों को अत्यन्त सहजता से पूर्ण करती है। चारू जी के काव्य में भी उत्तराखण्ड़ की नारी का अत्यन्त गौरवशाली विवेचन हुआ है।

"पहाड़ की स्त्री
उठाती है बाझ
झुकाती है नहीं सिर
हिमालय की तरह
बसन्त, पतझड़, बाढ़
भू–स्खलन, वज्रपात को
रखती है बाँधकर
अपनी कुट्यारि में।"7

चारू जी ने पहाड़ की प्रत्येक ऋतुओं को स्वयं अनुभव कर आनन्द प्राप्त किया है। कभी बसन्त का हर्षोल्लास मनाया तो कहीं पतझड़ की निराशा को स्वीकार किया। चारू जी ने पहाड़ के ज्वलन्त मुद्दों को भी अपने काव्य में गम्भीरता से प्रकट किया है। उनका मानना है कि इस रत्नों व सौन्दर्य की अद्भुत जन्म–स्थली को ऐसे विषमता शोभा नहीं देती, इसके उत्थान व विकास के लिए युवा वर्ग को प्राण प्रण से आगे आकर प्रयत्न करना चाहिए। वह व्यक्तिगत जीवन में भी पहाड़ के परिवेश को निर्वाह करते ही थे साथ ही अपने कवित्व में पहाड़ के समस्त मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा भी उन्होंने की है।

चारूचन्द्र जी निर्भयता से अपने विचार मत को व्यक्त करने के पक्षधर थे। उन्होंने अपनी कविताओं में पहाड़ के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनीतिक आदि सभी अभावों का प्रमुखता से प्रतिपादन किया है। उन्होंने पहाड़ की निर्धनता पर भी अपने गम्भीर भाव–लेखन अभिव्यक्ति से प्रकाश डाला है। उनका विचार था कि मैं हिमालय की पूजा अर्चना क्यों करूँ, उसको महान क्यों समझूँ, जब उसके नीचे निवास करने वाले अनेक पर्वतीय जन भूख–प्यास से पीड़ित हैं। उसको मैं महत्व तभी दूँगा जब वह धन–धान्य व समृद्धता की अनेक धाराएं व अलकनन्दाएँ प्रवाहित कर दे।

चारू जी की आँचलिक कविताओं के एक–एक शब्द में उनके हृदय की वेदना का जो जलाधि उथल–पुथल होता है वह स्पष्ठतः जन–मानस को पहाड़ की पीड़ा में प्लावित कर देता है। अतः यह कहना कि पहाड़ की वेदना के जो स्वर चारूचन्द्र चन्दोला के साहित्य में दिखाई देते हैं वह अन्यत्र दृष्टिगत नहीं होते। उन्होंने पर्वतीय नैसर्गिक सौन्दर्य को तो अपनी कविताओं में रमणीयता से प्रतिपादित किया ही है साथ ही पहाड़ की वेदना का कारूणिक व मार्मिक विवेचन भी उनके काव्य का प्रमुख भाग है।

संदर्भ संकेत–

1. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–05 युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।
2. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–07युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।

3. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–10युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।
4. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–11युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।
5. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–19युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।
6. अच्छी साँस– चारूचन्द्र चन्दोला–पृ0–33,प्रकाशक–चारूचन्द्र चन्दोला 'गढ़वालायन', 2,पटेल मार्ग, देहरादून।
7. कविता में पहाड़– चारूचन्द्र चन्दोला– पृ0–21 युगवाणी प्रकाशन 14–बी, क्रास रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड़।